Krishna Nand B.A I Hons (1) continue

स्वप्न की परिभाषा तथा स्वप्न कार्य

स्वप्न तंत्र या रचनाएँ (Dream Mechanisms) फ्रॉयड ने 'स्वप्न-रचना' की परिभाषा देते हुए कहा है कि " जिन प्रक्रमों से गुप्त स्वप्न को व्यक्त स्वप्न में बदला जाता है, उसे स्वप्नतंत्र या स्वप्न रचना कहते हैं"। फ्रॉयड ने ऐसी स्वप्न रचनाओं की चर्चा की है।

(i) संघनन (Condensation) संघनन स्वप्न की उस रचना या तंत्र को कहते हैं जिसमें व्यक्त विषय के एक ही तथ्य द्वारा गुप्त या अव्यक्त विषय के अनेक तथ्यों का प्रकाशन होता है। इस प्रकार, संघनन की प्रक्रिया द्वारा स्वप्न के गुप्त विषय लघु या संक्षिप्त होकर व्यक्त विषय में परिवर्तित या रूपांतरित होते हैं। यह क्रिया तीन प्रकार की होती है –

(क) गुप्त विषय के कुछ अंश या तत्व गायब हो जाते हैं।

(ख) गुप्त विषय की अनेक ग्रंथियों के आंशिक रूप ही व्यक्त विषय में रहते हैं।

(ग) व्यक्त स्वप्न में किसी सामान्य विशेषता वाले गुप्त अवयव या तत्व परस्पर मिलकर एक व्यक्ति या स्थान या वस्तु के रूप में प्रकट होते हैं।

मान लें, कोई व्यक्ति स्वप्न में एक बूढ़े व्यक्ति को देखता है, जिसकी शक्ल क नाम के व्यक्ति से मूँछें और दाढ़ी ख नाम के व्यक्ति से पैदा ग नाम के व्यक्ति से और पोशाक किसी घ नाम के व्यक्ति से मिलती है, लेकिन स्वप्न द्रष्टा उन सभी को एक साथ मिलाकर किसी च नाम के व्यक्ति के रूप में देखता है। इसी तरह स्वप्न में किसी स्थान या वस्तु को भी कुछ सामान्य विशेषता के आधार पर अनेक के बदले कोई एक स्थान या वस्तु दिखाई पड़ता है। संक्षेप में संघनन की प्रक्रियाओं का उद्देश्य स्वप्न के गुप्त विषयों को प्रकट कर उसके वास्तविक रूप को गुप्त रखना होता है।

(ii) विस्थापन (Displacement) विस्थापन संसरिप का कार्य करता है। स्वप्न के इस प्रक्रम द्वारा गुप्त विषय के पात्र या स्थान की जगह किसी दूसरे पात्र या स्थान अथवा उसका व्यक्त विषय की सामग्री का प्रकट होती है। विस्थापन का यह कार्य दो तरह से होता है –

(क) गुप्त विषय के अवयव (पात्र, अवयव अवयव (पात्र/स्थान/वस्तु, घटना) के स्थान पर दूसरी वस्तु या स्थान या पात्र का देखना। अर्थात गुप्त विषय के अवयव का पूर्ण स्थानापन्न हो जाता है, जिसमें गुप्त विषय की गोपनीयता ज्यों की त्यों बनी रहती है।

Krishna Nand B.A. I Hon's (2) continue

स्वप्न की परिभाषा तथा कार्य

(ii) किसी महत्वपूर्ण विषय के बदले महत्वहीन विषय को व्यक्त किये के रूप में देखना। ऐसा करने से गुप्त विषय की वास्तविकता छिप जाती है तथा वह अवास्तविक रूप में बदल जाती है। जैसे किसी जानी-पहचानी जगह के बदले अनजान जगह को देखना।

विस्थापन की एक विशेषता यह होती है कि विस्थापित अवयव गुप्त विषय के साथ, अस्पष्ट और हल्के से जुड़े रहते हैं। इसी जुड़ाव या संबंध के आधार पर विस्थापन का विश्लेषण कर स्वप्न के गोपनीय रहस्यों को जानने का प्रयास किया जाता है।

(iii) प्रतीकीकरण (Symbolization) स्वप्न वस्तुतः अचेतन का प्रतीक है। अतः स्वप्न के व्यक्त विषय में गुप्त या अव्यक्त विषय की सामग्री विभिन्न प्रतीकों के रूपों में प्रकट होती है। और ये प्रतीक प्रायः सार्वजनीन (universal) और काम या लैंगिक इच्छाओं के प्रतिनिधि होते हैं। जैसे- गोल और मुलायम आकृति की वस्तुएँ, (गेंद, आम, तकिया इत्यादि) स्त्री के स्तन के प्रतिरूप, और बोतल, नाव, जहाज आदि स्त्रीलिंग के। इसी प्रकार चढ़ना, उतरना, तैरना, नाचना (गति से संबद्ध क्रियाएँ) आदि संभोग के प्रतीक हैं।

(iv) नाटकीयता (Dramatization) स्वप्न के व्यक्त विषय मूर्त स्वरूप के होते हैं। अर्थात स्वप्न द्रष्टा स्वप्न देखते समय ऐसा अनुभव करता है, मानो पर्दे पर कोई चलचित्र या नाटक देख रहा है। अभिप्राय यह है कि स्वप्न में अचेतन के गुप्त विषय विकृत रूप में आकर गतिशील चित्र की भाँति प्रकट होते हैं। इस स्वप्न रचना के कार्य के कारण स्वप्न के गुप्त विषय वास्तविक जीवन की प्रत्यक्ष घटनाओं के रूप में व्यक्त होते हैं।

(v) पश्चात् विस्तारण (Secondary elaboration) स्वप्न की विभिन्न अनुभूतियाँ असंगत, अनियमित, निरर्थक, असामान्य एवं विचित्र स्वरूप की होती हैं। पर जब स्वप्नद्रष्टा जागृत अवस्था में अपने स्वप्न की अनुभूतियों का दूसरे के समक्ष वर्णन करता है तब वह उसे सार्थक, तार्किक, संगत

Krishna Nand B.A I Hons (3) continue

स्वप्न की परिभाषा तथा कार्य

और नियमित ढंग से वर्णित हुआ है। इसे ही पश्चात विस्तारण कहते हैं। फ्रायड के अनुसार स्वप्न के समाप्त होने के बाद व्यक्ति अर्द्धचेतन अवस्था में रहता है और इस अवस्था में अहं स्वप्न की असंबद्ध और बिखरी हुई कड़ियों में अपनी ओर से कुछ बातें जोड़कर या घटाकर उन्हें व्यवस्थित, सार्थक और तर्कसंगत बना देता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वप्न की उपर्युक्त पाँच रचनाओं के सहयोग से स्वप्न का 'गुप्त या अव्यक्त विषय' व्यक्त विषय के रूप में प्रकट होता है। यही कारण है कि स्वप्न की घटनाओं के वास्तविक अर्थ को समझना कठिन है।